माध्यमिक शिक्षा मण्डल, मध्यप्रदेश, भोपाल

20 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी (विशिष्ट)	0 0 1	हिन्दी

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

2337586

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

अंकों में

1	8	3	4	3	0	1	9 7
आठ	तीन	चार	तीन	शून्य	एक	नौ	सात

उदाहरणार्थ

1	1	2	4	3	9	5	6	8
एक	एक	दो	चार	तीन	नौ	पांच	छः	आठ

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष एवं पर्यवेक्षक द्वारा भरा जावे →

क :– पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या अंकों में 2 शब्दों में दो

ख :– परीक्षार्थी का कक्ष क्रमांक 15

ग :– परीक्षा का दिनांक 27 03 2018

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हाई स्कूल परीक्षा

केन्द्र क्र.-341028

मार्च 2018

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर	केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर
सरोज दुबे (हस्ताक्षर) 27-03-2018	(हस्ताक्षर)

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षक एवं उपमुख्य परीक्षक द्वारा भरा जावे →

प्रमाणित किया जाता है कि मूल्यांकन के समय पूरक उत्तर पुस्तिकाओं की संख्या उपरोक्तानुसार सही पाई होलो क्राफ्ट स्टीकर क्षतिग्रस्त नहीं पाया गया तथा अन्दर के पृष्ठों के अनुरूप मुख्य पृष्ठ पर अंकों की प्रविष्टी एवं अकों का योग सही है।

निर्धारित मुद्रा : नाम, पदनाम, मोबाईल नम्बर, परीक्षक क्रमांक एवं पदांकित संस्था के नाम की मुद्रा लगाएं।

उप मुख्य परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा	परीक्षक के हस्ताक्षर एवं निर्धारित मुद्रा
M REKWAL ADDYAPAK Gov.H.S.S.Kanac Reg.No.6277 Mo-9179658858	रमेशचन्द अध्यापक शा. उ. मा. वि. डोंगरगांव V. No. 13146

केवल परीक्षक द्वारा भरा जावे।

प्रश्न क्रमांक के सम्मुख प्राप्तांकों की प्रविष्टी करें।

प्रश्न क्रमांक	पृष्ठ क्रमांक	प्राप्तांक (अंकों में)
1		
2		
3		
4		
5		
6		
7		
8		
9		
10		
11		
12		
13		
14		
15		
16		
17		
18		
19		
20		
21		
22		
23		
24		
25		
26		
27		
28		

कुल प्राप्तांक शब्दों में | कुल प्राप्तांक अंकों में

Label/Copier Label A4ST-16 99.1x33.9mmx16

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र.(1) का उत्तर

(i) (द) प्रेम मार्गी

(ii) (स) पद्माकर

(iii) (स) आस्तिक

(iv) (द) व्यंग्य निबन्ध

(v) (स) अज्ञेय

प्रश्न क्र.(2) का उत्तर

(i) भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

(ii) कुण्डलियाँ

(iii) बिहारी

(iv) जयशंकर प्रसाद

(v) गौण

BSE

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 3 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्रं. 3 का उत्तर

(i) सत्य

(ii) असत्य

(iii) सत्य

(iv) सत्य

(v) सत्य

प्रश्न क्रं. 4 का उत्तर
(सही जोड़ी)

	सही उत्तर
(i) रामचरित मानस	(च) महाकाव्य
(ii) गेहूँ और गुलाब	(क) रामवृक्ष बेनीपुरी
(iii) दोपहर	(ख) द्विगु समास
(iv) बेटियाँ पावन दुआएँ हैं	(घ) अजहर हाशमी
(v) भगिनी निवेदिता	(ग) मार्गरेट एलिजाबेथ नोबुल

योग पूर्व २ + पृष्ठ 4 के अंक = कुल अंक

BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH, BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 5 का उत्तर

(i) 'थके हुए कलाकार से' के कृतिकार - 'धर्मवीर भारती' जी हैं।

(ii) लोक संस्कृति का जन्म 'गाँवों (गाँव)' में हुआ।

(iii) स्थायी भावों के उत्पन्न होने के कारण को 'विभाव' कहते हैं।

(iv) जब गुण को उसका पारखी ग्राहक (जो गुण का महत्व समझता है) मिल जाता है, तब गुण लाख रुपये में बिकता है।

(v) जगन्नाथ = जगत् + नाथ = व्यंजन सन्धि।

प्रश्न क्र. 6 का उत्तर

'स्तुति खण्ड' में जायसी ने सात दीपों और चौदह भुवनों की चर्चा की है। ईश्वर ने सात दीपों का निर्माण करके विश्व (संसार) को बनाया। एवं चौदह भुवनों का निर्माण करके उनके विभागों का वितरण किया।

BSE

5

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 5 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 27 का उत्तर (अथवा)

आवेदन पत्र

सेवा में,

श्रीमान, प्राचार्य महोदय जी,
सरस्वती शिशु मंदिर हाई स्कूल
विन्ध्या कालोनी, जिला - उमरिया (मध्यप्रदेश)।

विषय :- स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र हेतु आवेदन पत्र।

मान्यवर,

सविनम्र निवेदन है कि, मैं आपके विद्यालय का कक्षा - दशवीं 'अ' का छात्र हूँ।

मेरे पिताजी शासकीय अध्यापक हैं। मेरे पिताजी का स्थानान्तरण विन्ध्या कालोनी से रीवा के लिए हो गया है। उन्हें परिवार सहित रीवा जाना होगा। इस कारण से मैं अपनी आगे की पढ़ाई इस विद्यालय में जारी नहीं रख सकता हूँ। अस्तु श्रीमान जी से निवेदन है कि मुझे, मेरा स्थानान्तरण प्रमाण-पत्र प्रदान करने की महान कृपा करें।

धन्यवाद

आपका आज्ञाकारी शिष्य
नाम - प्रभात शुक्ल
कक्षा - दशवीं 'अ'

दिनाँक :- 27-03-2018

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 26 का उत्तर

(i) ~~शीर्षक → ' अनुशासन ' ।~~

(ii) ~~सारांश → अनुशासन और स्वतंत्रता में कोई विरोध नहीं है। अनुशासन और स्वतंत्रता दोनों~~
~~अनुशासन से अपनी स्वतंत्रता की रक्षा तो होती ही है, इससे दूसरों की स्वतंत्रता की रक्षा~~

प्रश्न क्र. 26 का उत्तर

(i) शीर्षक – ' अनुशासन '

(ii) सारांश → अनुशासन और स्वतन्त्रता में कोई विरोध नहीं है।
अनुशासन स्वतंत्रता का हनन नहीं करता बल्कि उससे दूसरों की स्वतंत्रता की रक्षा होती है। अनुशासन का पालन जो व्यक्ति नहीं करते वो अपने प्राण तो संकट में डालते ही हैं, दूसरों की स्वतंत्रता छीनते हैं। हमारे भावी निर्माता विद्यार्थियों को अनुशासन के गुणों का ज्ञान होना चाहिए, जिससे वे भारत के सच्चे सपूत बनकर देश को उन्नति के मार्ग पर ले जाएँ। अनुशासन मानव जीवन की उन्नति का साधन है।

B S E

7

योग पूर्व पृष्ठ		पृष्ठ 7 के अंक		कुल अंक
	+		=	

EDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPALBOARDOFSECONDARYEDUCATION,MAD

प्र. क्र.

प्रश्न क्र. 15 का उत्तर (अथवा)

(i) उपासना करने वाला → 'उपासक'।

(ii) पूजा करने वाला → 'पुजारी'।

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर (अथवा)

~~हरिगीतिका छंद → ख~~

~~वात्सल्य रस → सहृदय के हृदय में स्थित~~

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर

हरिगीतिका छंद → यह एक सम मात्रिक छंद है। हरिगीतिका छंद में चार चरण होते हैं। प्रत्येक चरण में 28 मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक चरण में 16 एवं 12 मात्राओं पर यति होती है। अन्त में लघु गुरु (।ऽ) होता है।

उदा. → ~~वह सनेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य~~

"वह सनेह की मूर्ति दयामयि माता तुल्य मही है।
उसके प्रति कर्तव्य तुम्हारा क्या कुछ शेष नहीं है।।
हाथ पकड़ कर प्रथम जिन्होंने चलना तुम्हें सिखाया।
~~भाषा~~ सिखा ~~हृदय~~ हृदय का अद्भुत रूप स्वरूप दिखाया।।"

8

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 8 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 18 का उत्तर

अन्योक्ति अलंकार > जहाँ प्रस्तुत कथन के माध्यम से अप्रस्तुत कथन का ~~बोध~~ बोध होता है, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है।
(अर्थात जहाँ किसी बात को सीधे (प्रत्यक्ष) रूप में न कह कर अप्रत्यक्ष रूप से कहा जाता है, वहाँ अन्योक्ति अलंकार होता है)

B S E

उदा >
माली आवत देखकर कलियन करी पुकारि।
फूले-फूले चुन लिए काल्ह हमारि हमारी बारि।।

स्पष्टीकरण > यहाँ माली (काल का प्रतीक) फूलों ~~वृद्ध~~(वृद्धों) को निश्चित समय में तोड़ ले जाता है। आज जो कलियाँ (युवक)(जवान) हैं उन्हें भी माली रूपी काल एक दिन तोड़ ले जाएगा।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

क्र.

प्रश्न क्र. 19 का उत्तर

(i) परमानंद = परम + आनंद = दीर्घ स्वर सन्धि।

(ii) निर्गुण = नि: + गुण = विसर्ग सन्धि।

(iii) जगदीश = जगत् + ईश = व्यंजन सन्धि।

प्रश्न क्र. 7 का उत्तर ~~स्वाभाव~~ (अथवा)

श्रद्धा का गायन स्वर भ्रमरी (मधुकरी) जैसा है। वह बोलती है तो मानो भ्रमरी गुंजार कर रही है, इसी गुंजार को सुनकर मनु श्रद्धा की ओर देखने को मजबूर हो गये। उन्होंने श्रद्धा को जैसे ही देखा उन्हें हर्ष मिश्रित झटका लगा।

प्रश्न क्र. 8 का उत्तर (अथवा)

कवि चट्टानों की छाती से दूध जैसे सुख के साधन (अर्थात 'दूध') निकालने को कह रहा है।
कवि कहते हैं तुम अपनी भुजाओं की आभा शक्ति को संभालो और जीवन में आगे बढ़ो। यदि मार्ग में बाधाएँ आए तो डटकर उनका मुकाबला करो।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 9 का उत्तर (अथवा)

नदियाँ आगे चलकर 'समुद्र' रूप में परिवर्तित हो जाती हैं।
नदियाँ निरन्तर गतिशील रहती हैं, और आगे चलकर समुद्र रूप में परिवर्तित हो जाती हैं। कवि कहते हैं कि मनुष्य को भी नदियों की तरह निरन्तर गतिशील रहना चाहिए।

प्रश्न क्र. 10 का उत्तर (अथवा)

कवि नियति से प्रश्न करते हैं कि हे नियति तुमने गरीबों को खाली-खाली पेट दिया, यह तो ठीक किया। परन्तु तुमने गरीबों को - दूसरों के सामने, अपने पेट में माढ़ने घुटने गाढ़ने एवं दूसरों के सामने फैलाने के लिए हाथ क्यों दिया?
अर्थात तुमने दूसरों के सामने झुकने और हाथ फैलाने के लिए - घुटने और हाथ क्यों दिया?
सार रूप में-
कवि कहते हैं कि तुमने गरीबों को हाथ और घुटने क्यों दिये?

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र. 11 का उत्तर

बूढे किसान ने राष्ट्रपति को उपहार में मिट्टी की एक छोटी हँडिया में पाव भर 'शहद' दिया। बूढा शहद को स्वयं तोड़कर लाया था। राष्ट्रपति ने कहा दादा आज का सर्वोत्तम उपहार आपने दिया।

प्रश्न क्र. 12 का उत्तर (अथवा)

पृथ्वी पर मानव अपने साथ 'भूख और प्यास' लेकर आया है।
आदिकाल से मनुष्य भूखा चला आ रहा है। उसने भूख मिटाने के लिए माँस, फल, माँ का दूध, पेड़-पौधो की पत्तियाँ सब कुछ भक्षण कर गया।
गेहूँ से मनुष्य की भूख शान्त हुई।

प्रश्न क्र. 13 का उत्तर

लेखक ने संगीत का जन्म श्रम से माना है। गाँव में स्त्रियाँ भोर में जगकर चक्की से, गेहूँ पीसती है। गेहूँ पीसते समय वे लोक संगीत की मधुर पंक्तियों को गाती है। उनके संगीत को सुनकर ऐसा लगता है मानो चक्की चलाने के श्रम के कारण ही संगीत का जन्म हो रहा है।

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 15 का उत्तर (अथवा)

यक्ष के संसार के सबसे बड़े आश्चर्य संबंधी प्रश्न पर युधिष्ठिर ने उत्तर दिया कि हर रोज आँखों के सामने कितने ही प्राणियों को मृत्यु के मुख में जाता हुआ देखकर भी बचे हुए प्राणी यह सोचते हैं कि हम अमर रहें, यह संसार का सबसे बड़ा आश्चर्य है।

प्रश्न क्र. 16 का उत्तर

भगिनी निवेदिता भारतीय स्त्रियों के गुणों से बहुत प्रभावित हुईं। भारतीय स्त्रियों की स्वाभाविक विनम्रता सरलता, सहजता आदि गुणों ने उन्हें बहुत प्रभावित किया। वे इन गुणों में शिक्षा और जोड़ना चाहती थीं, परन्तु उन्हें पश्चिम का अंधानुकरण बिलकुल स्वीकार्य नहीं था। क्योंकि पश्चिमी शिक्षा से भारतीय स्त्रियों के मूल गुण ही नष्ट हो जाते। इसीलिए उन्होंने अपने निवास स्थान के समीप एक विद्यालय खोला। उसमें वे बच्चियों को पढ़ाती एवं सिलाई के काम काज सिखाती थीं। प्रारम्भ में स्कूल में कोई नहीं आता था परन्तु धीरे-धीरे निवेदिता का भाव

बड़ा और विद्यालय विकसित हो गया।
उनका मानना था एक बार भारत की स्त्री शक्ति जाग जाये तो देश फिर महान हो जाएगा।

प्र. क्र. 20 का उत्तर (अथवा)

भारतेन्दु युग की विशेषताएँ —

(i) राष्ट्रीयता की भावना → भारतेन्दु युग के कवियों ने देश-प्रेम की रचनाओं के माध्यम से जन-मानस में राष्ट्रीयता की भावना का बीजारोपण किया।

(ii) सामाजिक चेतना का काव्य → इस काल का काव्य सामाजिक चेतना का काव्य है। इस युग के कवियों ने सामाजिक कुरीतियों, अंधविश्वासों को दूर करने हेतु कविताएं लिखी हैं।

(iii) हास्य व्यंग्य → हास्य व्यंग्य शैली को माध्यम बनाकर पश्चिमी सभ्यता, विदेशी शासन, सामाजिक कुरीतियों पर करारे व्यंग्य किये हैं।

(iv) अंग्रेजी शिक्षा का विरोध → इस युग के कवियों ने अंग्रेजी भाषा तथा अंग्रेजी शिक्षा के प्रचार-प्रसार के प्रति अपना विरोध प्रकट किया है।

(v) विभिन्न काव्य रूपों का प्रयोग → इस युग में काव्य के विविध रूप दिखाई देते हैं, जैसे — प्रबन्ध काव्य, मुक्तक काव्य,

(vi) काव्यानुवाद की परम्परा → संस्कृत एवं अंग्रेजी से काव्यानुवाद भी किया गया है।

14

योग पूर्व पृष्ठ | पृष्ठ 14 के अंक | कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 21 का उत्तर

जीवनी - जीवनी में लेखक किसी महापुरुष के जीवन-वृत्त को प्रस्तुत करता है। जीवनी किसी महान व्यक्ति के बारे में लिखी जाती है। जीवनी में विवरण एवं तथ्यों पर ध्यान रहता है। जीवनी वर्णनात्मक शैली में लिखी जाती है। जीवनी में लेखक किसी महापुरुष के समग्र जीवन का चित्रण करता है।

(i) पं.जवाहरलाल नेहरू - 'मेरी कहानी'

~~मेरी~~

~~(ii) बाबू गुलाबराय~~

(ii) हजारी प्रसाद द्विवेदी - 'बाणभट्ट की आत्मकथा'

प्रश्न क्र. 22 का उत्तर (अथवा)

सुभद्रा कुमारी चौहान

(i) रचनाएँ - (i) बिखरे मोती
(ii) उन्मादिनी
(iii) मुकुल और त्रिधारा

भावपक्ष - सुभद्राकुमारी चौहान के काव्य में वीर, श्रृंगार एवं वात्सल्य रस की त्रिवेणी प्रवाहित है परन्तु मूल रस वीर रस है।

B S E

BHOPAL BOARD OF SECONDARY EDUCATION, MADHYA PRADESH

राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत सुभद्राकुमारी चौहान ने स्वतंत्रता संग्राम की वेदना को जन-जन तक पहुँचाने का सराहनीय कार्य किया है। आपकी कविताओं में ओज एवं उत्साह का गुण विद्यमान है। आपकी रचनाएँ आज के बच्चों को प्रेरित करती हैं।

कलापक्ष ⇒ सुभद्रा कुमारी चौहान ने शुद्ध, साहित्यिक, खड़ी बोली में काव्य रचना की है। उसमें उर्दू, बुन्देलखण्डी के शब्दों का मधुर का प्रयोग किया है। आपने तरल, सरल, प्रवाहमयी मुक्तक शैली को अपनाया है। आपने गीत-शैली एवं लोकगीतों की गायन शैली का प्रयोग किया है। आपने मुहावरों, लोकोक्तियों, अलंकारों, छन्दों का सटीक प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान ⇒ परिवार, राजनीति और साहित्य के समन्वय के मध्य जीवन-पथ पर अग्रसर कवयित्री सुभद्रा कुमारी चौहान पर देश-प्रेम की गहरी छाप पड़ी है। सुभद्रा कुमारी चौहान का हिन्दी साहित्य में महत्वपूर्ण स्थान है। आपने वीर रस से युक्त काव्य रचना करके हिन्दी साहित्य का विकास किया। हिन्दी साहित्य में आप सदा चिरस्मरणीय रहेंगी।

16

योग पूर्व पृष्ठ + पृष्ठ 16 के अंक = कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 23 का उत्तर

डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल

(i) रचनाएँ → (i) उरु ज्योति
(ii) कल्पवृक्ष
(iii) वेद विद्या
(iv) कला और संस्कृति

भाषा → वासुदेव शरण अग्रवाल जी ने शुद्ध साहित्यिक, खड़ी बोली में रचनाएँ की हैं। आपने भाषा के सहज रूप को स्वीकार किया है। आपकी भाषा भाव एवं विचार के अनुकूल परिवर्तित होती रहती है। आपकी भाषा में चित्रोपमता, सजीवता का गुण सर्वत्र विद्यमान है। आपने आवश्यकतानुसार उर्दू, अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग किया है। आपने मुहावरों एवं लोकोक्तियों का बड़ा सटीक प्रयोग किया है।

शैली → वासुदेव शरण अग्रवाल ने निम्न शैलियों को अपनाया है –

(i) भावात्मक शैली → भावपूर्ण स्थलों पर इसका प्रयोग किया है।

(ii) वर्णनात्मक शैली → वर्णन करते समय इस शैली का प्रयोग किया है।

(iii) विवरणात्मक शैली → विषय संबंधी विवरण प्रदान करते समय इस शैली का प्रयोग किया है।

(iv) विचारात्मक शैली → विचारात्मक शैली के सर्वत्र दर्शन होते हैं।

B
S
E

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

इसके अलावा गवेषणात्मक शैली, आलोचनात्मक शैली, संवाद शैली, व्यंग्य शैलि शैली का प्रयोग किया है।

साहित्य में स्थान → राष्ट्रीय चेतना से ओत-प्रोत साहित्य सृजन करने वाले साहित्यकारों में वासुदेव शरण अग्रवाल का महत्वपूर्ण स्थान है। आपने निबंध, नाटक, कहानी, उपन्यास आदि विषयों पर साधिकार लेखनी चलाई है। आपकी रचनाओं गम्भीरता, उत्कृष्टता के सर्वत्र दर्शन होते हैं। हिन्दी साहित्य में सशक्त गद्यकार के रूप में अग्रवाल जी का महत्वपूर्ण स्थान है। हिन्दी साहित्य सदैव आपका ऋणी रहेगा।

प्रश्न क्र. २५ का उत्तर (अथवा)

संकेत → बाँध - - - - - - - - - - - - - - जाना।

सन्दर्भ → प्रस्तुत पद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक 'नवनीत' के 'जीवन दर्शन' नामक पाठ के 'चिर सजग आँखे उनींदी आज कैसा व्यस्त बाना' नामक शीर्षक से अवतरित है। महादेवी वर्मा ने इनकी रचना की है।

प्रसंग → मनुष्य को सांसारिक मोह माया में न उलझने का संदेश दिया गया है।

व्याख्या → कवियित्री महादेवी वर्मा, मनुष्य से कहती हैं कि क्या तुझे इस संसार के मोम जैसे क्षणिक बंधन ~~अपने~~ आ तुझे बाँध लेंगे? अर्थात तू उनके उलझन में फँस जायेगा?

मध्यप्रदेश
BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

हे मनुष्य इस संसार की नवयुवतियाँ जो
सुन्दर वस्त्राभूषणों से सुसज्जित हैं, क्या तेरे
मार्ग की बाधा बन जायेगी ?
हे मनुष्य क्या भौंरे की मधुर ~~क~~ गुनगुन की
~~क्रन्दन~~, विश्व का करुण क्रदन (क्रन्दन)
समाप्त कर देंगी ?
हे मनुष्य ओस की बूंदों से भीगे फूल क्या
तुझे डुबो देंगे ?
हे मनुष्य तुम अपनी परछाई तक को अपने
लिए कारा मत बनाना।
तुम्हें तो जाग्रत रहना चाहिए, क्योंकि
तुम्हें दूर तक जाना है।

विशेष → (i) मनुष्य को निरन्तर चलने का परामर्श दिया गया है।
(ii) भाषा सरल है।
(iii) भावात्मक शैली।

प्रश्न क्र. 25 का उत्तर

संकेत → उस पद - - - - - - नहीं है।

सन्दर्भ → प्रस्तुत गद्यांश हमारी पाठ्यपुस्तक नवनीत ? के 'परीक्षा' नामक पाठ से अवतरित है। इसकी रचना प्रेमचन्द ने की है।

प्रसंग → उदार मानव के बारे में वर्णन करके उनके गुणों का वर्णन किया गया है।

सुजान सिंह जी

व्याख्या → कहते हैं कि हमें देवगढ़ रियासत के दीवान पद के लिए एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता थी जिसके हृदय में आत्मबल, दया आदि गुण विद्यमान हों। वह व्यक्ति जो आपत्ति के समय किसी व्यक्ति की सहायता करने को तैयार रहे, ऐसा आत्मबल उस व्यक्ति में हो जिससे वह आपत्ति का सामना वीरता के साथ कर सके। सुजान सिंह जी कहते हैं, हमें इस रियासत के सौभाग्य से ऐसा व्यक्ति मिल गया है। ऐसे कम ही व्यक्ति संसार में हैं, और जो व्यक्ति इस तरह के गुणों से युक्त हैं वे कीर्ति, और मान के शिखर पर बैठे हुए हैं, उन तक हमारी पहुँच नहीं है। उदार हृदय वाला व्यक्ति ही देवगढ़ रियासत का दीवान बनेगा। पं. जानकीनाथ का चयन इन्हीं गुणों के कारण किया गया।

विशेष → (i) उदार गुणों से युक्त व्यक्ति का वर्णन है।
(ii) परीक्षा का महत्व बताया गया है।
(iii) भाषा सरल है।

प्रश्न क्र. 10 का उत्तर (अथवा

कवि अभिमन्यु अनंत जी नियति से प्रश्न करते हैं कि तुमने गरीबों को खाली पेट दिया चलो यह ठीक किया, परन्तु तुमने गरीबों को पेट में माढ़ने के लिए - घुटने, एवं दूसरों के सामने फैलाने के लिए - हाथ क्यों दिया ? इससे अच्छा बेचारे गरीब भूखे ही मर जाते उन्हें दूसरों के सामने [illegible] हाथ तो नहीं फैलाना पड़ता।

(20) [ ] + [ ] = [ ]

योग पूर्व पृष्ठ पृष्ठ 20 के अंक कुल अंक

BOARDOFSECONDARYEDUCATION,MADHYAPRADESH,BHOPAL

प्रश्न क्र.

प्रश्न क्र. 24 का उत्तर

प्रश्न – 'ब' का उत्तर

(i) वृक्षारोपण (रूपरेखा)

रूपरेखा

[(i) प्रस्तावना,

(ii) वृक्षों का महत्व,

(iii) वृक्षों की उपयोगिता (लाभ),

(iv) वृक्षों की कटाई से हानियाँ,

(v) वृक्षारोपण करने की आवश्यकता,

(vi) वृक्षारोपण कार्यक्रम,

(vii) उपसंहार ।]

B
S
E

माध्यमिक शि...

4 पृष्ठीय

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम	परीक्षा का दिनांक
हिन्दी (विशिष्ट)	0 0 1	हिन्दी	27 03 2018

स्टीकर हीरे के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

0946086

C-

परीक्षार्थी का रोल नम्बर

X	1	8	3	4	3	0	1	9	7

शब्दों में

X	...	आठ	तीन	चार	तीन	शून्य	एक	नौ	...

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हाई स्कूल परीक्षा

केन्द्र क्र.-341028

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

कमलेश तिवारी

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक.................................तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

प्रश्न क्र. 28 का उत्तर

उत्तर – (अ) (निबंध)

(i) विज्ञान की देन

रूपरेखा –

[(i) प्रस्तावना,
(ii) विश्व विज्ञान की व्यापकता,
(iii) विज्ञान के वरदान (चमत्कार),
(iv) विज्ञान का विनाशकारी स्वरूप,
(v) उपसंहार।]

"सावधान मनुष्य को विज्ञान का उपहार।
है सुवासित प्रगति सुख से चतुर्दिक संसार ॥"

अंकों का योग

(i) प्रस्तावना → विज्ञान से मानव को असीमित शक्तियाँ मिली हैं। आज विज्ञान और मानवजीवन एक-दूसरे के पर्याय बन गए हैं। मनुष्य विज्ञान की सहायता से आकाश में पंछी की भांति विहार कर सकता है, वह पर्वतों को लांघ सकता है, विज्ञान की सहायता से मनुष्य जलयान द्वारा समुद्र की छाती को चीर कर, अपने उत्थान पर इठला सकता है। विज्ञान के चमत्कारों से सम्पूर्ण संसार एक घर बन गया है। दूरियाँ सिमट कर रह गई हैं। काल की छाती पर करारा घूंसा मारकर विज्ञान मन्द-मन्द गति से मुस्कुरा रहा है।

(ii) विज्ञान की व्यापकता → विज्ञान ने हर क्षेत्र में प्रगति की है, विश्व के देशों में आगे बढ़ने की होड़ लगी रहती है। विज्ञान की सहायता से मानव जीवन बहुत सक्रिय एवं सम्पन्न हो गया है। भोजन, आवास, यातायात, चिकित्सा, मनोरंजन, युद्ध आदि सभी क्षेत्र विज्ञान से प्रभावित हैं। विज्ञान के बिना मानव जीवन की कल्पना भी असंभव प्रतीत हो रही है।

(iii) ~~विज्ञान~~ विज्ञान के चमत्कार (वरदान) ⇒ विज्ञान की सहायता से मनुष्य भौतिक शक्तियों पर विजय पा रहा है। आज प्रकृति के गूढ़ रहस्यों से मानव विज्ञान की सहायता से प्रकाश में ला रहा है। आज अणुशक्ति के द्वारा वर्षा, गर्मी, ठण्ड आदि के कृत्रिम साधनों का प्रयोग करना संभव हो गया है।

विज्ञान के अपार साधनों से मानव जीवन सुखी और आनन्दित हो गया है।

ईंधन, सूचना, उपकरणों, सूचना प्रौद्योगिकी का विकास हो गया है। अब तो बिजली की सहायता से झाड़ू लगाना, कपड़े धोना, प्रेस करना संभव हो गया है। विज्ञान ने बल्ब, कूलर, कम्प्यूटर आदि का आविष्कार किया है।

विज्ञान की सहायता से निम्न क्षेत्रों में प्रगति हुई है -

(i) यातायात ⇒ विज्ञान ने मानव जीवन में दूरियों को नजदीकियों में बदल दिया है। मानव आज हजारों किलोमीटर की यात्रा कुछ ही घंटों में कर सकता है। विज्ञान की सहायता से साइकिल, मोटर, कार, रेल, हवाईजहाज आदि साधन आज मनुष्य के पास हैं।

(ii) कृषि एवं उद्योग ⇒ विज्ञान ने कृषि एवं उद्योग का असीमित विकास किया है। जैसे हरित क्रांति के द्वारा अब फसलों का उत्पादन बढ़ गया है।

(iii) चिकित्सा → विज्ञान की सहायता से आज असाध्य रोगों की चिकित्सा संभव विज्ञान से परखनली से शिशु को जन्म देकर आज जीवनदाता बन गया है।

(iv) अंतरिक्ष → विज्ञान अंतरिक्ष में पहुँचकर वहाँ के सारे राज जान चुका है। चन्द्रमा पर पहुँचकर पर्याप्त जानकारी जुटा चुका है। मंगल एवं शनि ग्रहों की जानकारी प्राप्त कर चुका है।

(v) विज्ञान का विनाशकारी स्वरूप → विज्ञान ने मानव के विकास में जहाँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाई तो वहीं अपने विध्वंसकारी स्वरूप से भी परिचित करा चुका है। आज एक ही एटम बम के द्वारा हजारों मील क्षेत्र को नष्ट किया जा सकता है। विज्ञान ने ऐसी मिसाइलों का निर्माण किया है जो प्रलय ला सकती हैं। यह कथन सत्य है- "विज्ञान के दुरुपयोग में मानव का विनाश निहित है।"

माध्यमिक शिक्षा मण्डल, ...

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे ↓

परीक्षा का विषय	विषय कोड	परीक्षा का माध्यम
हिन्दी	0 0 1	हिन्दी

3 2018

स्टीकर तीर के निशान ↓ से मिलाकर लगायें

माध्यमिक शिक्षा मण्डल मध्यप्रदेश

BOARD OF SECONDARY EDUCATION MADHYA PRADESH BHOPAL

परीक्षार्थी द्वारा भरा जावे →

परीक्षा का नाम एवं परीक्षा केन्द्र क्रमांक की मुद्रा

हाई स्कूल परीक्षा

केन्द्र क्र.-341028

पर्यवेक्षक का नाम एवं हस्ताक्षर

केन्द्राध्यक्ष / सहायक केन्द्राध्यक्ष के हस्ताक्षर

मुख्य उत्तर पुस्तिका के अंतिम पृष्ठ क्रमांक.................................तक कुल प्राप्तांक [ ] + [ ] = [ ]

(v) उपसंहार > विज्ञान अपने एक स्वरूप में जहाँ मानव का विनाश करने के लिए तैयार है तो वहीं दूसरे स्वरूप में मानव को अभी भी बहुत कुछ दे सकता है। विज्ञान स्वयं में शक्ति नहीं है, वह मानव के हाथ में आकर शक्ति बनता है। यह पूर्णरूपेण मानव पर है कि वह उसका उपयोग विध्वंस के लिए करे या सृजन के लिए। हमें भगवान सद्बुद्धि दें ताकि हम विज्ञान का सृजन के लिए उपयोग करें।

"भला-बुरा न कोई रूप से कहलाता है।
दृष्टि में स्वयं दोष-गुण दिखलाता है।।
कोई कमल की कली देखता है कीचड़ में।
किसी को चाँद में भी दाग नजर आता है।।"

B
S
E

के अंकों का योग